प्रकरण ५ भारतीय नौसेना

ऐसा देखा जाता है कि भारत में ईसा पूर्व २३०० में हड़प्पा संस्कृति के कालावधि में पहली गोदी बनाई गई थी । यह गुजरात राज्य के मंगरोल बंदरगाह के पास थी । ई.स. ५ वीं व १० वीं सदी में चोल तथा कलिंग के राजाओं ने अपनी नौसेना का विकास करते हुए उसकी सहायता लेकर मलाया, सुमात्रा तथा पश्चिमी जावा (इंडोनेशिया) तक अपने साम्राज्य की सीमाएँ बढ़ाईं । इसी काल में भारतीय उपमहाद्वीपों से इन साम्राज्यों तथा चीन से व्यापार करने के लिए मध्यवर्ती केंद्र के नाते अंदमान और निकोबार द्वीपों को महत्त्वपूर्ण स्थान था ।

१७ वीं सदी के अंत में भारत के पश्चिमी तट पर जंजीरा का सिद्दी और मुगलों के बीच हुए समझौते के कारण देश के सागरी हित में बाधा उत्पन्न हुई । छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने सागरी हित की रक्षा करने हेतु सिद्दोजी गूजर तथा बाद में कान्होजी आंग्रे इन दो नौसेना प्रमुखों के नेतृत्व में अपनी नौसेना (आरमार) की निर्मिति की । कान्होजी आंग्रे ने पूरे कोंकण तट पर अपनी सत्ता बनाई और मराठा सागरी सेना शक्तिशाली बनाई । अंग्रेज, पुर्तुगाली तथा डचों का सफलतापूर्वक सामना भी किया ।

भारतीय नौसना का विकास भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद तेज गति से हुआ । सागरी सेना की निर्मिति, नई-नई युद्ध नौकाओं को अंतर्भूत करके उनका आधुनिकीकरण प्रारंभ हुआ है । भारतीय नौसेना में आजकल विमान-वाहक जहाजों से लेकर पनडुब्बियों तक सभी प्रकार की युद्धनौकाओं को समाविष्ट किया गया है ।

भारतीय नौसेना का कार्य

- **सेना कार्य (सैनिकी कार्य) :** नौसेना के दो प्रकार के सैनिकी कार्य हैं ।

  अ) आक्रमण के समय का कार्य : नाविक मुहिम के अंतर्गत आक्रमण करते समय शत्रु की सेना/सैनिक, शत्रु का क्षेत्र तथा उनका व्यापार ध्वस्त करना ।

  ब) बचाव के समय का कार्य : नाविक मुहिम के अंतर्गत शत्रु के नाविक आक्रमण से अपने सैनिक, क्षेत्र तथा व्यापार की रक्षा करना ।

- **राजनीतिक कार्य :** भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्रहित के उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए उचित सागरीय वातावरण की निर्मिति करना ।

- **समुद्री कानून के संबंध में कार्य :** भारतीय नौसेना का प्रमुख कार्य हैं भारतीय सागरी सीमा तथा तटवर्ती क्षेत्र की रक्षा करना । इसके अलावा सागरी तस्कर तथा आतंकवादियों का बंदोबस्त करना । इस संदर्भ में भारतीय नौसेना तटीय रक्षक दल, राज्य सागरी पुलिस तथा बंदरगाह प्राधिकरण की सहायता मिलती है । २६ नवंबर २००८ को मुंबई पर हुए आतंकवादियों के हमले के बाद सागर तटीय क्षेत्र की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी नौसेना पर सौंपी गई हैं ।

- **नियंत्रण एवं प्रभुत्त्व :** भारतीय नौसेना का मुख्य कार्यालय नई दिल्ली में है । नौसेनाध्यक्ष (Chief of Naval Staff) नौसेना का संपूर्ण नियंत्रण करते हैं :-

नाविक विभाग (कमांडस) :

भारतीय नौसेना के कमांडस मुख्य कार्यालय की ओर से नियत किए गए कार्य, दिए गए भौगोलिक क्षेत्र के कार्य तथा जिम्मेदारियाँ पूरी करते हैं । ये कमांडस निम्नानुसार हैं ।

अ) पश्चिमी नाविक कमांड : भारत के पश्चिम तटीय क्षेत्र के गुजरात, महाराष्ट्र, गोआ और कर्नाटक राज्य के बंदरगाह, नाविक छावनी तथा नाविक केंद्र और वहाँ के जहाजों (नौकाएँ) की रक्षा करने की जिम्मेदारी इस कमांड की है । मुंबई में कमांड का मुख्य कार्यालय है ।

ब) पूर्वीय नाविक कमांड : भारत के पूर्व तटीय क्षेत्र के बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के बंदरगाह, नाविक छावनी तथा नाविक केंद्र और वहाँ के जहाजों की सुरक्षा करने की जिम्मेदारी इस कमांड की है । इसका मुख्य कार्यालय विशाखापट्टनम में है ।

क) दक्षिणी नाविक कमांड : भारत के दक्षिण की ओर के केरल तथा लक्षद्वीप द्वीपसमूह और उनके बंदरगाह, नाविक छावनी तथा नाविक केंद्र के जहाज तथा युद्ध नौकाओं की रक्षा करना इस कमांड की जिम्मेदारी है । इस नाविक कमांड का मुख्य कार्यालय कोच्ची में है ।

ड़) अंदमान और निकोबार संयुक्त विभाग (कमांड) : अंदमान और निकोबार द्वीपसमूहों की सुरक्षा की जिम्मेदारी इस कमांड की है । इस कमांड में थलसेना, वायुसेना तथा नौसेना सैनिकों की संख्या बड़ी मात्रा में है । अतः इस कमांड को संयुक्त कमांड भी कहते हैं । इस कमांड का स्वामित्व तीनों सेनादलों के अधिकारी क्रम से सँभालते हैं । इस कमांड का मुख्य कार्यालय पोर्टब्लेअर में हैं ।

भारतीय नौसेना के जहाजों के प्रकार :

विमान वाहक जहाज : यह नौका आकार और वजन की दृष्टि से बड़ी युद्ध नौका है । इस जहाज पर विमानों को उड़ान भरने की तथा उनको उतारने के लिए सुविधाएँ होती हैं । इस जहाज पर वायुयान होते हैं अतः इसे 'तैरने वाला हवाई अड्डा' कहते हैं । विमान वाहक नौका गतिमान युद्ध का प्रभावी साधन होता है ।

विनाशिका : विनाशिका नौका भारी तथा दूर पल्ले वाले विभिन्न शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित लड़ाकू नौका है । इन नौकाओं का आकार नौसेना (समुद्री सेना) के विमान वाहक नौकाओं से छोटा होता है । इसपर हवाई जहाज विरोधी तोपें, लघु पल्ले वाले शस्त्रास्त्र, शत्रु के जहाज, भूमि पर हमला करने वाले क्षेपणास्त्र हवाई जहाज अथवा शत्रु के क्षेपणास्त्रों के विरोध में हमला करने वाले मार्गदर्शक क्षेपणास्त्र, पनडुब्बियों के विरोध में प्रयुक्त किए जाने वाले क्षेपणास्त्र, (टारपेडो और डेप्थचार्ज) ये शस्त्रास्त्र होते हैं । साथ-ही-साथ अपने सैनिकों को शत्रु के तटीय क्षेत्र पर उतरते समय सुरक्षा तथा विमान वाहक जहाजों की रक्षा करने का कार्य करते हैं ।

फ्रिगेट : फ्रिगेट यह युद्ध नौका विनाशिका से भी आकार में छोटी होती है । इस नौका पर भी मार्गदर्शक क्षेपणास्त्र होते हैं । जहाज पर होने वाले अन्य शस्त्रास्त्र तथा क्षेपणास्त्रों का प्रयोग युद्ध के समय शत्रु के तटवर्ती प्रदेश तथा जहाजों पर हमला करने के लिए करते हैं ।

कॉर्वेटस : यह फ्रिगेट से आकार में छोटा तथा किनारे पर गश्त देने वाली नौका से बड़ा जहाज गतिमान तथा हल्के शस्त्रात्रों से सुसज्जित होता है ।

माईन स्वीपर : इसे जलसुंरग विरोधी नौका नाम से भी जाना जाता है । यह नौका आकार में छोटी होती है । शत्रु द्वारा समुद्रों में फैलाए गए जलसुरंग ढूँढ़ना तथा उन्हें नष्ट करने वाले यंत्र इस पर होते हैं ।

लैंडिंग शिप : जिस तटीय क्षेत्र पर बंदरगाह जैसी सुविधाएँ नहीं होती, वहाँ इस बड़ी आकार वाली नौकाओं से वाहन, विभिन्न सामग्री तथा सैनिकों को लेकर जाने वाले समुद्री तटों पर उतारने का कार्य इस नौका द्वारा किया जाता है ।

पेट्रोल बोट (गश्तवाली बोट) : नौसेना का यह सबसे छोटा जहाज होता है । इसका प्रमुख कार्य समुद्री तटवर्तीय क्षेत्र की देखभाल करना ।

पनडुब्बी : शत्रुसेना में सर्वाधिक डर निर्माण करने वाला अस्त्र है पनडुब्बी । पनडुब्बी का संचार पानी के नीचे होता है । पनडुब्बी का कार्य स्वतंत्रता से चलता है । शत्रु की नौकाओं को ढूँढ़ना और उन्हें टॉरपीडो अथवा क्षेपणास्त्र की सहायता से ध्वस्त करना इसका प्रमुख कार्य होता है ।

सहायक जहाज : समुद्री मुहीमों में लड़ाकू नौकाओं को किसी भी प्रकार की आवश्यकता के अनुसार सहायक सामग्री की आपूर्ति करने का कार्य ये सहायक जहाज करते हैं । जहाज का प्रारूप इसके अनुसार बनाया जाता है ।

अनुसंधान जहाज : इन जहाजों का उपयोग सागरी तल तथा समुद्री मार्ग की खोज करके अपने जहाजों की निर्मिति तथा उसके उपकरणों का प्रयोग करने की सूचनाएँ देने का कार्य करते हैं ।

प्रशिक्षण जहाज : नौसेना अधिकारी और नौसैनिकों को सागरी युद्ध का प्रशिक्षण देने के लिए इस जहाज का उपयोग किया जाता है ।

इसके साथ नौसेना दल के पास जमीन से काम करने वाले लड़ाकू हवाई जहाज, हेलिकॉप्टर तथा गश्त देने वाले हवाई जहाज होते हैं ।

उपक्रम

१. 'भारतीय नौसेना के संदर्भ में अंदमान निकोबार द्वीप और लक्षद्वीप द्वीपसमूहों का महत्त्व,' इस विषय पर चर्चा कीजिए और मुद्दे लिखिए ।

२) मराठों की समुद्री सेना विकसित करने में कान्होजी आंग्रे के योगदान संबंधी जानकारी प्राप्त कीजिए और मुद्‌दे लिखिए ।

JBLAYN